विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 14-04-2021

वर्ग सप्तम शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

संधि विच्छेद, संस्कृत में संधि, संस्कृत व्याकरण

-संस्कृत में संधि विच्छेद

गुण संधि - आद्गुणः -

गुण संधि

गुण संधि का सूत्र आद्गुण: होता है। यह संधि स्वर संधि के भागो में से एक है। संस्कृत में स्वर संधियां आठ प्रकार की होती है। दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण् संधि, अयादि संधि, पूर्वरूप संधि, पररूप संधि, प्रकृति भाव संधि। इस पृष्ठ पर हम गुण संधि का अध्ययन करेंगे !

गुण संधि के चार नियम होते हैं!

अ, आ के आगे इ, ई हो तो ए; उ, ऊ हो तो ओ तथा ऋ हो तो अर् हो जाता है। इसे गुण-संधि कहते हैं। जैसे -

नियम 1.

अ + इ = ए ; नर + इंद्र = नरेंद्र

अ + ई = ए ; नर + ईश= नरेश

आ + इ = ए ; महा + इंद्र = महेंद्र

आ + ई = ए ; महा + ईश = महेश

नियम 2.

अ + उ = ओ ; ज्ञान + उपदेश = ज्ञानोपदेश

आ + उ = ओ ; महा + उत्सव = महोत्सव

अ + ऊ = ओ ; जल + ऊर्मि = जलोर्मि

आ + ऊ = ओ ; महा + ऊर्मि = महोर्मि

नियम 3.

अ + ऋ = अर् ; देव + ऋषि = देवर्षि

नियम 4.

आ + ऋ = अर् ; महा + ऋषि = महर्षि